संगीत नाटक समाचार

संगीत नाटक अकादेमी

Sangeet Natak Akademi

अंक 16 ◆ अप्रैल – मई 2008

अकादेमी के पदाधिकारी

अध्यक्ष
श्री राम निवास मिर्धा

उपाध्यक्ष
श्री कावालम नारायण पनिक्कर

वित्तीय सलाहकार
श्री आर.सी. मिश्रा

सचिव
श्री जयंत कस्तुआर

इस अंक में

उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ युवा पुरस्कार 2007 अलंकरण समारोह 1

संगीत संगम, अगरतला 3

अकादेमी पुस्तकालय का यंत्रों से चालन 4

दिल्ली में अकादेमी के मासिक कार्यक्रम 4

प्रलेखन 5

संगीत नाटक अकादेमी के घटक एकक और केन्द्र 5

स्मृति में 6

उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ युवा पुरस्कार 2007 अलंकरण समारोह

संगीत नाटक अकादेमी ने संगीत, नृत्य और नाटक के क्षेत्रों में 35 वर्ष से कम आयु के युवा कलाकारों के प्रोत्साहन हेतु वर्ष 2006 से उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ युवा पुरस्कार प्रारम्भ किया। भारत रत्न और अकादेमी रत्न सदस्य, उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ के नाम से जाने जाने वाले इस युवा पुरस्कार में 25,000/- रुपये की नकद धनराशि (पच्चीस हजार रुपये), ताम्रपत्र और अंगवस्त्र प्रदान किये जाते हैं।

पुरस्कार का उद्देश्य प्रदर्शन कलाओं के विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट युवा प्रतिभा की पहचान करना, उन्हें प्रोत्साहित करना और युवावस्था में राष्ट्रीय मान्यता देना है ताकि वे अपने चयनित कला क्षेत्र में अधिक लगन से और समर्पित होकर काम कर सकें।

तीस युवा कलाकारों को, जिन्होंने प्रदर्शनकलाओं के अपने–अपने क्षेत्र में छाप छोड़ी, 2007 के लिए युवा पुरस्कार प्रदान किये गये। पुरस्कार अलंकरण समारोह 29 अप्रैल, 2008 को दिल्ली में अकादेमी के मेघदूत थियेटर में आयोजित किया गया। समारोह अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री कावालम नारायण पनिक्कर के स्वागत भाषण से आरम्भ हुआ। पुरस्कार अकादेमी अध्यक्ष श्री राम निवास मिर्धा द्वारा दिये गये । तत्पश्चात् अध्यक्ष महोदय का सम्बोधन हुआ और अकादेमी के सचिव श्री जयंत कस्तुआर ने सभी का धन्यवाद किया।

युवा पुरस्कार पाने वालों का एक सात–दिवसीय उत्सव दिल्ली में 29 अप्रैल – 6 मई, 2008 तक आयोजित किया गया। वर्ष 2007 में उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ पुरस्कार पाने वालों के नाम इस प्रकार हैं:

संगीत

संदीप हरीश देशमुखः हिन्दुस्तानी गायन
मीता पंडितः हिन्दुस्तानी गायन
सरवर हुसैनः हिन्दुस्तानी वाद्य (सारंगी)

संगीत नाटक अकादेमी के अध्यक्ष श्री राम निवास मिर्धा भरतनाट्यम कलाकार सी. लावण्या अनन्त को उस्ताद बिस्मिल्लाह खां पुरस्कार देते हुए। उनके बायीं ओर हैं अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री कावालम नारायण पनिक्कर।

भीमन्ना जाधवः हिन्दुस्तानी वाद्य (सुन्दरी)

सिक्किल सी. गुरूचरणः कर्नाटक गायन

अक्काराय एस. सुब्बालक्ष्मीः कर्नाटक वाद्य (वायलिन)

पेरावली जया भास्करः कर्नाटक वाद्य (मृदंगम)

मेरेमबम मैनीटन सिंहः संगीत की अन्य प्रमुख परम्पराएं (नटसंकीर्तन)

नृत्य

सी. लावण्या अनन्तः भरतनाट्यम

शर्वरी अशोक जेमिनीसः कथक नृत्य

कलामंडलम् षणमुखदास सी.: कथकलि

लाइश्रम बीना देवीः मणिपुरी नृत्य

मधुस्मिता मोहन्तीः ओडिसी नृत्य

यामिनी रेड्डीः कूचीपुड़ि नृत्य

मेथिल देविकाः मोहिनीआट्टम

के.एस.आर. अनिरुद्धः नृत्य के लिए संगीत – भरतनाट्यम मृदंगम

रंगमंच

सोहिनी सेनगुप्ताः अभिनय

राजिन्द्र शर्मा 'नानू': अभिनय

अनूप त्रिवेदीः अभिनय

विजय कुमारः निर्देशन

संजीव गुप्ताः निर्देशन

एम. गणेशः निर्देशन

लाइश्रम इबोचौबा सिंहः सम्बद्ध रंगमंच कलाएं (प्रकाश)

श्रीकांत टी.: सम्बद्ध रंगमंच कलाएं (प्रकाश)

पारम्परिक / लोक / जनजातीय नृत्य / संगीत / रंगमंच और पुतुलकला

के. बाबू पेरुवान्ननः थेय्यम, केरल

अदिति शर्माः लोक नृत्य, राजस्थान

ऊपर : अकादेमी अध्यक्ष, उपाध्यक्ष एवं सचिव युवा पुरस्कार विजेताओं के साथ। मध्य : मिजोरम का लोक नृत्य। नीचे : कामेडी ऑफ टेरर का एक दृश्य।

रोजेत बुहफाँगः पारम्परिक संगीत, मेघालय
मन्नू यादवः पारम्परिक संगीत (बिरहा), उत्तर प्रदेश
लक्ष्मी सोढ़ीः जनजातीय नृत्य (मुरिया), छत्तीसगढ़
सी. लालरिनसियामीः लोक नृत्य, मिज़ोरम

उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ युवा पुरस्कार समारोह कार्यक्रम
29 अप्रैल – 6 मई, 2008
मेघदूत थिएटर, कॉपरनिकस मार्ग

मंगलवार 29 अप्रैल, सायं 7.30 बजे
भीमन्ना जाधव / सुन्दरी
संदीप हरीश देशमुख / हिन्दुस्तानी गायन

बुधवार 30 अप्रैल, सायं 6.30 बजे
मीता पंडित / हिन्दुस्तानी गायन
सरवर हुसैन / सारंगी
सिक्किल सी. गुरूचरण / कर्नाटक गायन
संगत पेरवलि जय भास्कर / मृदंगम्

बृहस्पतिवार 1 मई, सायं 6.30 बजे
लावण्या अनन्त / भरतनाट्यम
संगत के.एस.आर. अनिरुद्ध / मृदंगम्
कलामण्डलम् षणमुखदास सी. / कथकलि

शुक्रवार 2 मई, सायं 6.30 बजे
मेथिल देविका / मोहिनीआट्टम
लाइश्रम बीना देवी / मणिपुरी
यामिनी रेड्डी / कूचिपुड़ि

शनिवार 3 मई, सायं 6.30 बजे
मधुस्मिता मोहन्ती / ओडिसी
शर्वरी अशोक जेमिनीस / कथक

रविवार 4 मई, सायं 6.30 बजे
रोजेत बुहफाँग / पारम्परिक संगीत, मेघालय
सी. लालरिनसियामी /लोक नृत्य, मिज़ोरम
लक्ष्मी सोढ़ी / जनजातीय नृत्य, छत्तीसगढ़
मन्नु यादव / पारम्परिक संगीत (बिरहा), उत्तर प्रदेश
अदिति शर्मा / लोक नृत्य, राजस्थान

सोमवार 5 मई, सायं 6.30 बजे
सोहिनी सेनगुप्ता / एकल अभिनय
राजेन्द्र शर्मा "नानू"/एकल अभिनय
अनूप त्रिवेदी / एकल अभिनय

मंगलवार 6 मई, सायं 6.30 बजे
खिचड़ी, नुक्कड़ नाटक, विजय कुमार द्वारा निर्देशित
कॉमेडी ऑफ़ टेरर, संजीव गुप्ता द्वारा निर्देशित नाटक

संगीत संगम, अगरतला

वरिष्ठ संगीतकारों का एक समारोह, सूचना, सांस्कृतिक कार्य और पर्यटन विभाग, त्रिपुरा सरकार, के सक्रिय सहयोग से 30 मई – 3 जून, 2008 को अगरतला में आयोजित किया गया। इस समारोह का उद्घाटन त्रिपुरा के उच्च शिक्षा, सूचना, संस्कृति एवं पर्यटन और अनुसूचित जाति कल्याण मंत्री श्री अनिल सरकार द्वारा किया गया।

यह समारोह हिन्दुस्तानी संगीत की विभिन्न धाराओं का संगम था जिसका प्रतिनिधित्व देश के प्रमुख संगीतकारों ने सारंगी, पखावज़, रूद्रवीणा, तबला, ध्रुपद, ख्याल व सितार पर वाद्य संगीत प्रस्तुत किया। जिन संगीतकारों ने इस समारोह में भाग लिया उनमें से कुछ ऐसे थे जिन्होंने अपने–अपने क्षेत्रों में व्यापक ख्याति अर्जित की है।

इस समारोह में असम के बोरगीत, उड़ीसा के ओडिसी संगीत, मणिपुर के नट संकीर्तन और पश्चिम बंगाल के नज़रुल गीती और रवीन्द्र संगीत जैसी प्रादेशिक संगीत शैलियों का अभ्यास करने वाले संगीतकारों के प्रदर्शन भी सम्मिलित किये गये। समारोह में कर्नाटक गायन और सरस्वती वीणा का भी प्रदर्शन हुआ। मुख्यमंत्री श्री मानिक सरकार ने 3 जून, 2008 को समापन समारोह में भाग लिया। दर्शकों ने समारोह की भूरि–भूरि प्रशंसा की और समाचार पत्रों में इसकी व्यापक सराहना की गई।

कार्यक्रम विवरण :

30 मई
नायर हुसैन खान, वाराणसीः शहनाई

ऊपर : *बहाउद्दीन डागर रूद्र वीणा के साथ।* नीचे : *हिन्दुस्तानी गायिका पूर्णिमा चौधरी।*

हशमत अली तबले पर

अजय पोहनकर, मुम्बईः हिन्दुस्तानी गायन
गुलाम सबीर खाँ और मुराद अली, दिल्लीः सारंगी

31 मई
शक्ति चक्रवर्ती, अगरतलाः हिन्दुस्तानी गायन
संगीता शंकर, मुम्बईः वायलिन (हिन्दुस्तानी)

1 जून
पूर्णिमा चौधरी, कोलकाताः हिन्दुस्तानी गायन (ठुमरी, दादरा, कजरी और चैती)
बहाउद्दीन डागर, मुम्बईः रूद्र वीणा
हशमत अली व अकरम खाँ, दिल्लीः तबला

2 जून
एमनी कल्यानी लक्ष्मीनारायण, हैदराबादः सरस्वती वीणा
चेतन जोशी, बोकारोः बांसुरी (हिन्दुस्तानी)
भोलानाथ मिश्र, दिल्लीः हिन्दुस्तानी गायन

3 जून
प्रेम कुमार मल्लिक, इलाहाबादः ध्रुपद
कावालम श्रीकुमार, तिरुवनन्तपुरम, कर्नाटक गायन
सौमित्र लाहिरी, कोलकाताः सितार

संगीत की प्रादेशिक परम्पराओं का विशेष सत्र

1 जून, प्रातः 10 बजे
पुन्यव्रत देव गोस्वामी, तेजपुर, असम का बोरगीत
विजय कुमार जेना, भुवनेश्वरः ओडिसी संगीत
अमर घोष, अगरतला, नज़रुल गीती और रविन्द्र संगीत
मेमे देवी, मणिपुरः नट संकीर्तन

अकादेमी पुस्तकालय का यंत्रों से चालन

संगीत नाटक अकादेमी मुख्य रूप से प्रदर्शन कलाओं के विद्यार्थियों, शोधकर्ताओं तथा कलाकारों की आवश्यकताओं को पूरा करती है। अकादेमी पुस्तकालय ने गत वर्षों के दौरान प्रदर्शनकारी कलाओं पर विशिष्ट पुस्तकों का संग्रह अर्जित कर लिया है।

दूरसंचार में प्रगति से अकादेमी के पुस्तकालय का स्वचालन हो गया है। बड़े पुस्तकालयों के मूलभूत कृत्यों तथा सम्बद्ध कार्यकलापों को अंजाम देने के लिए यांत्रिक, इलैक्ट्रॉनिक उपकरणों का व्यापक स्तर पर उपयोग किया गया है। समुन्नत साफ्टवेयर लिबसिस 4 (रिलीज़ 5) को 6 कम्प्यूटरों, एक सरवर और पांच पाठक कम्प्यूटरों पर लगाया गया है ताकि अकादेमी पुस्तकालय को अधिक प्रयोक्ता–अनुकूल बनाया जा सके।

आन–लाईन पब्लिक ऐकसेस कैटलॉग

अकादेमी पुस्तकालय ने हॉल ही में आन–लाईन पब्लिक ऐकसेस लाईब्रेरी कैटलॉग (ओपाक) आरम्भ किया है जिसके अन्तर्गत पुस्तकालय की पुस्तकों को लाया जा चुका है। अस्सी प्रतिशत अकादेमी के संगीत नाटक में प्रकाशित लेख भी आन–लाइन उपलब्ध कराये गये हैं। इस से पुस्तकालय के प्रयोक्ता आसानी और तेजी से जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

आन–लाईन सूची पत्रों के माध्यम से लेखक, शीर्ष, विषय, प्रकाशक और प्रकाशन के स्थान आदि की जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

दिल्ली में अकादेमी के मासिक कार्यक्रम

पारम्परिक पुतुलकला / रंगमंच / फिल्म / वीडियो रिपोर्ट

प्रह्लाद नाटक

अकादेमी पुरस्कृत श्रीकृष्ण चन्द्र साहू के छात्रों ने 17 मई, 2008 को मेघदूत–2 थियेटर, रवीन्द्र भवन, नई दिल्ली में उड़ीसा का पारम्परिक रंगमंच प्रह्लाद नाटक प्रस्तुत किया। गंजम (उड़ीसा) के छात्रों, प्रीतिकांता नाहक, दशरथी नाहक, सैबा नाहक, निरंजन नाहक, सपना नाहक, रंजन गौडा, बलराम मलिक और मथुराचन्द्र साहू ने नाटक प्रस्तुति में भाग लिया।

अकादेमी की पारम्परिक प्रदर्शनकारी कलाओं के प्रोत्साहन और संरक्षण की योजना के अन्तर्गत प्रह्लाद नाटक में प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन उड़ीसा में किया जा रहा है। एक वर्ष का प्रशिक्षण पूरा होने के पश्चात् छात्रों को अभिनय करने का अवसर दिया गया और प्रशिक्षण कार्यक्रम में हुई प्रगति की समीक्षा भी की गई। इस योजना के तहत अध्यापकों को मानदेय दिया जाता है जबकि छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है।

संगीत नाटक अकादेमी के अध्यक्ष श्री राम निवास मिर्धा यंत्र चालित अकादेमी पुस्तकालय का शुभारम्भ करते हुए।

प्रलेखन

उस्ताद बिस्मिल्लाह खां युवा पुरस्कार मेघदूत थियेटर, नई दिल्ली, 29 अप्रैल–6 मई, 2008, *वीडियो 18.50 घंटे, फोटो 1200।*

संगीत संगम, अगरतला 30 मई–3 जून, 2008। *ऑडियो 16.12 घंटे, फोटो 400।*

पंडित राजेन्द्र गुरुजी के नेतृत्व में सरस्वती संगीत पार्टी द्वारा अकादेमी के फिल्म स्क्रीनिंग हॉल में **राजस्थान की नौटंकी की विशेष रिकॉर्डिंग,** *वीडियो 2.30 घंटे।*

प्रो. नंद लाल गर्ग द्वारा प्रस्तावित एक परियोजना के तहत 28–30 मई, 2008 को **अर्की, हिमाचल प्रदेश में शिव डमरु का विशेष प्रलेखन।**

शिव डमरु की रिकार्डिंग हिमाचल प्रदेश में अर्की के निकट तीन प्राचीन गुफाओं अर्थात् कुनिहार में तांडव गुफा, तत्तापानी में शिव गुफा और लुटरु महादेव गुफा में की गई। सात प्रकार के प्राचीन डमरुओं (रामन्ना और अर्ध डमरु, ढोकली, डाखू, धोनरु/डमरु, पॉल, गुज्जू, हुडुका) के अभिनय और नाटकी तकनीकों की भी रिकॉर्डिंग की गई। *वीडियो 3.31 घंटे। फोटो 93।*

संगीत नाटक अकादेमी के घटक एकक और केन्द्र

जवाहर लाल नेहरू मणिपुरी डांस एकेडमी, इम्फाल

स्थापना दिवस समारोह

अकादेमी के 54वें स्थापना दिवस का आयोजन 1 अप्रैल 2008 को एकेडमी की रंगशाला में किया गया। डॉ. एस. एस. सिद्धू, महामहिम मणिपुर के राज्यपाल और अध्यक्ष, जवाहर लाल नेहरू मणिपुरी डांस एकेडमी मुख्य अतिथि के रूप में इस समारोह में शामिल हुए। एकेडमी के छात्रों ने मणिपुर नृत्य और संगीत का कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

नई दिल्ली में कार्यक्रम

एकेडमी के 20 कलाकारों के एक समूह ने नई दिल्ली में 6 अप्रैल, 2008 को असम राइफल्स के 125वें स्थापना दिवस के अवसर पर मणिपुरी नृत्य और संगीत का कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

नया शैक्षिक सत्र

वर्ष 2008–09 के लिए एकेडमी का नया शैक्षिक सत्र 16 अप्रैल, 2008 से प्रारम्भ हुआ। सभी पाठयक्रमों के लिए कुल 450 छात्र पंजीकृत किये गये।

कथक केन्द्र, नई दिल्ली

वार्षिक परीक्षा 2007–08

शैक्षिक सत्र 2007–08 के लिए वार्षिक परीक्षा 30 अप्रैल से 15 मई, 2008 तक आयोजित की गई।

नये प्रवेश 2008–09

कथक केन्द्र के विभिन्न पाठयक्रमों में प्रवेश के लिए नई प्रवेश प्रक्रिया 13 जुलाई, 2008 से आरम्भ होगी।

कूटियाट्टम केन्द्र, तिरुवनन्तपुरम

केरल के प्राचीन संस्कृत रंगमंच, कूटियाट्टम को बढ़ावा देने के लिए कूटियाट्टम केन्द्र की स्थापना की गई जो केरल में सभी गुरुकुलों को वित्तीय सहायता देगा।

सलाहकार समिति की बैठक

सलाहकार समिति की एक बैठक कूटियाट्टम केन्द्र, तिरुवनन्तपुरम में 20 अप्रैल, 2008 को आयोजित की गई।

केन्द्र के बाहर कार्यक्रम

केन्द्र के बाहर राज्य के चार अलग–अलग स्थानों पर इस अवधि में चौदह कार्यक्रम आयोजित किये गये।

अर्की, हिमाचल प्रदेश के शिव डमरु के ऊपर अकादेमी की विशेष रिकार्डिंग के दौरान कुनिहार में चम्बा के लोक कलाकार स्थानीय संगीत यंत्र, रामन्ना और अर्ध डमरु बजाते हुए।

स्मृति में

संगीत नाटक अकादेमी एवं इससे सम्बद्ध निकाय अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित श्रीमती शरण रानी बाकलीवाल, श्री तीरथ राम आज़ाद, श्री किशन महाराज, श्री फिरोज़ दस्तूर, श्री नेय्यात्तीनकारा वासुदेवन के निधन पर गहरा शोक व्यक्त करती है।

शरण रानी बाकलीवाल

दिल्ली में 1929 में पैदा हुई श्रीमती शरण रानी बाकलीवाल ने उस्ताद अलाउद्दीन खाँ और अली अकबर खाँ के मातहत सरोद में अपना प्रशिक्षण प्राप्त किया। उन्होंने छोटी आयु में संगीत गोष्ठी में प्रदर्शन प्रारम्भ कर दिया और अपने लम्बे जीवनकाल में संयुक्त राज्य, ब्रिटेन, फ्रांस, भूतपूर्व रूसी संघ तथा कई अन्य देशों का दौरा किया। चिरकालीन रेडियो कलाकार के रूप में शरण रानी ने कुछ ग्रामोफोन रिकॉर्ड, ऑडियो कैसेट और सी.डी. भी तैयार कीं जिनमें एक एलबम भी शामिल है जो 'यूनेस्को' द्वारा जारी किया गया।

श्रीमती शरण रानी ने कई वर्षों तक पुराने और लुप्तप्राय संगीत वाद्ययंत्र संकलित किये जो बाद में उन्होंने दिल्ली स्थित राष्ट्रीय संग्रहालय को दे दिये जिसने उनके प्रदर्शन के लिए एक विशेष प्रदर्शनकक्ष का प्रावधान किया है। संगीत के क्षेत्र में अपनी उपलब्धि के लिए शरण रानी को 1968 में पद्मश्री से और 2000 में पद्मभूषण से सम्मानित किया गया। 1986 में हिन्दुस्तानी वाद्य संगीत में उनके योगदान के लिए उन्हें संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार से नवाज़ा गया और उन्होंने 1999 में आकाशवाणी से विशेष सम्मान प्राप्त किया। शरण रानी ने लोस ऐन्जल्स नगर विश्वविद्यालय, यू.एस.ए. से सम्मानार्थ डॉक्टर की उपाधि भी प्राप्त की। उन्होंने *दि डिवाईन और सरोद – एक प्राचीन भारतीय संगीत वाद्य यंत्र* जैसी पुस्तकें भी लिखीं।

श्रीमती शरण रानी बाकलीवाल का 8 अप्रैल, 2008 को दिल्ली में निधन हुआ।

तीरथ राम आज़ाद

श्री तीरथ राम आज़ाद का जन्म 1933 में लायलपुर, पश्चिम पंजाब में हुआ जो अब पाकिस्तान में है। एक अभिनेता, नर्तक और गायक के रूप में उनका प्रशिक्षण मास्टर बुंदे खाँ और ओ.पी. तरुण द्वारा लायलपुर में संचालित रंगमंच समूहों में आरम्भ हुआ। उन्होंने विभाजन के पश्चात् दिल्ली में रंगमंच में अपना काम जारी रखते हुए गिरिजा शंकर और चम्पक लाल से प्रशिक्षण प्राप्त किया। अंततोगत्वा हनुमान प्रसाद, गिरिराज महाराज, नारायण प्रसाद, चिरंजी लाल और कृष्ण महाराज के मातहत एक कथक नर्तक के रूप में उनका प्रशिक्षण हुआ। उन्हें उस्ताद मेहर अली खाँ के मातहत तलवंडी शैली गायन में भी प्रशिक्षण दिया गया।

श्री तीरथ राम आज़ाद ने 1950 के दशक में स्वतः को कथक नृत्य के एक अभिनेता और शिक्षक के रूप में स्थापित किया। उन्होंने देश–विदेश की काफी यात्रा की और भारत तथा अन्य देशों में अभिनय किया और कार्यशालाओं तथा सेमिनार आयोजित किये। वह 1958 से 1988 तक नई दिल्ली स्थित गंधर्व महाविद्यालय में नृत्य विभाग के अध्यक्ष रहे।

श्री तीरथ राज आज़ाद ने कई नर्तकों को कथक नृत्य का प्रशिक्षण दिया जो स्वयं प्रतिष्ठित कलाकार बन गये हैं। इन्होंने कथक नृत्य पर कई पुस्तकें लिखीं हैं जैसे *कथक प्रवेशिका, कथक शृंगार, कथक दर्पण, कथक नृत्य में नाट्यशास्त्रीय तत्व* और *कथक नृत्य के घराने*। श्री तीरथ राम आज़ाद को कथक नृत्य के क्षेत्र में समर्पित सेवा के लिए संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार से वर्ष 2005 में सम्मानित किया गया।

श्री तीरथ राम आज़ाद का 22 अप्रैल, 2008 को दिल्ली में निधन हो गया।

किशन महाराज

1923 में वाराणसी में पैदा हुए पंडित किशन महाराज ने प्रारंभिक शिक्षा अपने चाचा बनारस घराना के प्रख्यात तबला वादक पंडित कंठे महाराज से प्राप्त की। पांच दशकों से लम्बे अपने कार्यकाल में किशन महाराज एक उच्च कोटि के कलाकार और शिक्षक के रूप में जाने जाने लगे। उन्होंने सभी प्रसिद्ध हिन्दुस्तानी संगीतज्ञ, गायकों तथा वादकों का साथ दिया और कथक नृत्य में एकल प्रस्तुति तथा संगत में महारत हासिल की। किशन महाराज तबला कला के एक बहुत ही उत्कृष्ट और वरिष्ठ प्रतिनिधि थे, उन्होंने विश्व में व्यापक पैमाने पर प्रदर्शन किया और यश कमाया। एक आदरणीय गुरू होने के नाते उन्होंने बहुत से देश व्यापी ख्याति प्राप्त तबला संगीतज्ञों को प्रशिक्षित किया।

उन्हें 1984 में संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार से, 1973 में पद्मश्री और 2002 में पद्मविभूषण से सम्मानित किया गया। 2004 में ग्वालियर के जीवाजी विश्वविद्यालय द्वारा उन्हें सम्मानार्थ 'डी.लिट.' की उपाधि प्रदान की गई। भारतीय संगीत में उत्कृष्ट योगदान के लिए पंडित किशन महाराज को 2006 में संगीत नाटक अकादेमी की रत्न सदस्यता से सम्मानित किया गया।

पंडित किशन महाराज का 4 मई, 2008 को वाराणसी में निधन हो गया।

फिरोज़ दस्तूर

1919 में मुम्बई में पैदा हुए फिरोज़ दस्तूर ने आरम्भ में श्री के. डी. जाओकर और बाद में प्रसिद्ध स्वामी गंधर्व – ये दोनों किराना घराने के थे – से हिन्दुस्तानी गायन संगीत सीखा। गायक–अभिनेता के रूप में उन्होंने चौदह वर्ष की आयु में फिल्म *लाल ए यमन* में श्रीगणेश किया और कुछ वर्षों तक अनेक नाटकों में प्रमुख भूमिकायें निभाईं।

एक विशिष्ट संगीत शिक्षक के रूप में फिरोज़ दस्तूर ने अनेक छात्रों को प्रशिक्षित किया। 1969 में स्थापना होने पर बम्बई विश्वविद्यालय के संगीत विभाग से वह बड़े करीब से जुड़े रहे। प्रतिष्ठाग्राही सम्मेलनों में प्रदर्शनों के अतिरिक्त श्री दस्तूर ने 1952 से हर सेवाई गंधर्व महोत्सव में भाग लिया।

उन्होंने अपने जीवनकाल में अनेक सम्मान और पुरस्कार प्राप्त किये। 1989 में सूरत के दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय द्वारा सम्मानित डॉक्टर की उपाधि से और 1990 में महाराष्ट्र गौरव पुरस्कार से सम्मानित किया गया। संगीत के क्षेत्र में उनकी महारथ और इसके संवर्धन में उनके योगदान को ध्यान में रखते हुए श्री फिरोज़ बेजांजी दस्तूर को 1986 में हिन्दुस्तानी गायन संगीत के लिए संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

श्री फिरोज़ दस्तूर का 9 मई, 2008 को मुम्बई में निधन हो गया।

नेय्यात्तीनकारा वासुदेवन

नेय्यात्तीनकारा, केरल में 1940 में पैदा हुए श्री नेय्यात्तीनकारा नारायणन वासुदेवन ने कर्नाटक गायन संगीत में श्री रामानंद कृष्णन और श्री सेम्मान गुडी आर. श्रीनिवास अय्यर से प्रशिक्षण प्राप्त किया। उन्होंने स्वाति थिरूनाल संगीत महाविद्यालय, तिरुवानन्तपुरम में भी प्रशिक्षण प्राप्त किया।

नेय्यात्तीनकारा वासुदेवन का संगीत सभाओं में लम्बा और सफल कार्यकाल रहा, उन्होंने भारत में व अनेक अन्य देशों में अपनी कला का प्रदर्शन किया। उन्होंने 1974 से त्रिसूर और तिरुवानन्तपुरम में एक स्टाफ कलाकार के रूप में आकाशवाणी में काम किया। वह विशेष रूप से स्वाति तिरुमल की रचनाओं के अपने संग्रह के लिए प्रसिद्ध थे, उनमें से कुछ को डिस्क और कैसेटों में रिकॉर्ड किया गया। उन्होंने मलयालम फिल्मों में भी गायन किया।

उन्होंने अपने जीवनकाल में अनेक सम्मान और पुरस्कार प्राप्त किये जैसे केरल संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार (1982) और इसकी सदस्यता (1989), और पद्मश्री (2004)। संगीत के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ठ योगदान के लिए उन्हें 1999-2000 में संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

श्री नेय्यात्तीनकारा वासुदेवन का 13 मई, 2008 को तिरुवानन्तपुरम में निधन हो गया।

निजी परिचलन हेतु। *प्रकाशक, सचिव, संगीत नाटक अकादेमी, रवीन्द्र भवन, फ़िरोज़शाह रोड, नई दिल्ली 110 001. फोनः 23387246/7/8. फैक्सः 23381621.*
ईमेलः sangeetnatak@bol.net.in. डिज़ाइन व प्रोडेक्शनः stetdelhi@gmail.com